सीमा जौनसारी,
निदेशक

उत्तराखण्ड शासन

प्रारम्भिक शिक्षा, उत्तराखण्ड,
ननूरखेड़ा, देहरादून।
फोन नं0–0135–2781828
दिनांकः 15 अगस्त, 2016

''स्वतन्त्रता दिवस सन्देश''

70वें स्वतन्त्रता दिवस के इस शुभ अवसर पर मैं प्रदेश के समस्त छात्र–छात्राओं, उनके माता–पिता, अभिभावकों, समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं, कर्मचारियों एवं अधिकारियों को हार्दिक बधाई देती हूँ। आज के इस शुभ अवसर पर उन अमर शहीदों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का भावपूर्ण स्मरण करते हुए अपनी श्रद्धांजलि तथा देश को स्वतंत्र कराने में उनके कष्टों व बलिदानों के प्रति अपनी कृतज्ञता भी अर्पित करती हूँ।

राज्य गठन के पश्चात विद्यालयों की स्थापना और शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से अनेक कार्य किये गये हैं। प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लक्ष्य प्राप्ति की दिशा मे बढते हुए 99.80 प्रतिशत की सकल नामांकन दर एवं 92.86 प्रतिशत की ठहराव दर प्राप्त की गयी है। शतप्रतिशत नामांकन व ठहराव सुनिश्चित किये जाने हेतु और परिश्रम किये जाने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किये जाने की आवश्यकता है। जिससे विद्यार्थी अधिकाधिक ज्ञान अर्जित कर उसका अपने जीवन में उपयोग कर सकें। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे में हमारे विद्यार्थी भाषा में राष्ट्रीय औसत 64 के सापेक्ष 57 प्रतिशत तथा गणित मे 66 के सापेक्ष 62 प्रतिशत पर हैं। इस दिशा में अभी बहुत कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों का पठ्न–पाठ्न सुचारू रूप से प्रारम्भ हो सके इस हेतु पाठ्य–पुस्तकों का वितरण वर्ष के प्रारम्भ मे ही कर दिया गया है। अब पठ्न–पाठ्न को रूचिकर बनाते हुए अपेक्षित स्तर की दक्षता का विकास करना हमारी जिम्मेदारी है। कक्षावार एवं विषयवार छात्रों के ज्ञान को प्रदर्शित करने हेतु प्रत्येक विद्यालय को दक्षता सूचकांक दिये गये हैं। गुणवत्तायुक्त शिक्षा की समीक्षा एवं दक्षता सम्प्राप्ति स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से ''दीक्षा अभियान'' के अन्तर्गत CCE कार्यक्रम को नये रूप में प्रारम्भ किया जा रहा है। जिससे कि CCE की वास्तविक स्थिति ज्ञात हो सकेगी तथा सम्बन्धित विषय मे दक्षता स्तर प्राप्त करने में सहयोग मिलेगा।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य बच्चों के पठन–पाठन के अतिरिक्त उनकी अभिरूचियों को चिन्हित कर उन्हें खेल–कूद, स्काउट–गाइड, गीत–संगीत, वाद–विवाद प्रतियोगिता, आलेखन आदि अभिरूचियों को आगे बढ़ाने हेतु भी प्रोत्साहित कर सर्वांगीण विकास करना भी है। छात्र/छात्राओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने एवं विज्ञान के क्षेत्र में रूचि उत्पन्न करने हेतु समीपस्थ विद्यालयों/वैज्ञानिक संस्थानों एवं विज्ञान मेलों का भ्रमण कराया जाना भी आवश्यक है। सभी अध्यापकों का उत्तरदायित्व है कि बच्चों को उनकी अभिरूचि के क्षेत्रों में विभाग एवं अन्य संस्थाओं द्वारा कराये जाने वाले कार्यक्रमों/आयोजनों में अधिकाधिक प्रतिभाग करने के अवसर उपलब्ध करायें, जिससे विद्यार्थियों को सीखने के अधिक से अधिक अवसर के साथ–साथ अपनी दक्षता में अभिवृद्धि का अवसर प्राप्त हो सके।

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है। स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूकता तथा अच्छी आदतों का विकास किया जाना भी शिक्षा का एक अंग है। व्यक्तिगत

एवं परिवेशीय स्वच्छता के लिए ''स्वच्छ भारत अभियान, हाथ धोओ अभियान' संचालित किये जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त बच्चों के स्वास्थ्य रक्षा के दृष्टिगत विभिन्न रोगों की पहचान एवं उपचार के लिए राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम का अधिकाधिक लाभ उठाया जाय।

विगत वर्षों में छात्र एवं अभिभावकों का रूझान पब्लिक स्कूलों की ओर अत्यधिक है, जो कि विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं अध्यापकों के लिए चिन्तनीय है। 6 अप्रैल से अध्यापक, अभिभावक और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से ''जन–जन का प्रयास शिक्षा का विकास'' के नाम से छात्र नामांकन कार्यक्रम सितम्बर तक चलाया जाना है। अभी तक इसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। आप लोगों के सराहनीय योगदान से अद्यतन 40 हजार बच्चे विद्यालयों में नामांकित कराये गये हैं। राजकीय विद्यालयों में गुणवत्ता शिक्षा की कड़ी में प्रत्येक विकास खण्ड के दो प्राथमिक एवं एक उच्च प्राथमिक विद्यालय को मॉडल स्कूल बनाया गया है। हर्ष का विषय है कि कुछ मॉडल स्कूलों में पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को भी प्रवेशित कराया है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।

सबके सुन्दर एवं सुरक्षित भविष्य हेतु गुवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने जैसा समाजोपयोगी कार्य बिना समाज के सहयोग से नहीं किया जा सकता है। इस हेतु विद्यालयों में 'विद्यांजलि' कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य विद्यालयों विशेषकर सरकारी विद्यालयों मे सह शिक्षा गतिविधियों को समृद्ध एवं मजबूत बनाने हेतु स्वयं सेवी संस्थानों की सहभागिता है। यह भी आवश्यक है कि बच्चों को विद्यालय भेजने, उनके पठ्न–पाठ्न की प्रगति में रूचि लेकर प्रोत्साहित करने, विद्यालय एवं विद्यार्थियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता में अभिभावक, स्वयंसेवी संस्थायें एवं समाज कें अन्य तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभायें। अनेक समाज सेवा संस्थाऐं विद्यालयों के लिये कार्य भी कर रही हैं तथा और भी कार्य करना चाहती हैं। हमारा उत्तरदायित्व है कि समाज एवं सामाजिक संस्थाओं को बच्चों एवं विद्यालय के विकास में सहभागी बनायें।

अन्त में देश के शहीदों, राष्ट्र की सेवा में अपना अभीष्ट योगदान करने वाले सपूतों को याद करते हुए स्वतंत्रता दिवस के इस पर्व पर हम अपने कार्यों को पूरी ईमानदारी के साथ सम्पादित करने का संकल्प लें।

पुनः आपको 70वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनायें।

जय हिन्द

(सीमा जौनसारी)
निदेशक